देवयज्ञ

खुद सीखें अपने देवताओं को प्रसन्न करना

शुभम आर्य

ॐ

देवयज्ञ

(खुद सीखें अपने देवताओं को प्रसन्न करना)

लेखक

शुभम आर्य(छात्र)

योगविज्ञानविभाग

गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार

वर्ष-2019

Whatsapp numbr -8368778655

E-mail id- vicharyogya@gmail.com

Blog-vicharyoga.blogspot.com

Facebook profile-
https://www.facebook.com/profile.php?id=100033964506030

Twitter account-Shubham Kumar https://twitter.com/Shubham58249977?s=09

instagram account-shubhamkumar.budhana

हमारी आने वाली पुस्तको के बारे में जानने के लिए और उन्हें प्राप्त करने के लिए या फिर हमे अपने सुझाव देने के लिए आप हमसे संपर्क करे,आपका हमेशा स्वागत है।हमको अपने अनमोल सुझाव देने पर, हम आपके आभारी रहेंगे Ḱ ।

अगर आप चाहते हैं...
आप,आपके बच्चे,आपके माता पिता उत्तम स्वस्थ्य,रोग रहित,अच्छे गुण कर्म स्वभाव वाले हो...
तो इस पुस्तक को पूरा आवश्य पढ़े ही नही बल्कि...
इसमें जो विद्या दी गई है,उसे सही ढंग से सीख भी लें और रोजाना...
खुद ही यज्ञ कर्म करके इसका खूब लाभ उठायें...

दो शब्द

आज के समाज में एक अवधारणा चली हुई है कि केवल पंडित ही यज्ञ कर्म करा सकता है, जोकि बिलकुल गलत है। यज्ञ कर्म तो कोई भी व्यक्ति कर और करा सकता है,जोकि इसकी विधि को जानता हो।

इसलिए इसी बात को ध्यान में रखते हुए,प्रत्येक व्यक्ति को यज्ञ कर्म सिखाने,और इसके लाभो का ज्ञान कराने के उद्देश्य से ये पुस्तक बहुत ही परिश्रम से तैयार की गई है।

इसलिए इसे ध्यान से पढ़ें और इसका जितना हो सके लाभ उठाएं।

समर्पण

जिनके अथक परिश्रम,त्याग,और तपस्या से मेरे जीवन का निर्माण हुआ है उन पूज्य माता पिता और देवतुल्य गुरुजनों को,ये पुस्तक सादर समर्पित करता हूँ

विषय सूची

1.देवता कौन?

2.देवयज्ञ क्या है?

3.वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यज्ञ के लाभ

4.यज्ञ के प्रति लोगो की अज्ञानता,और वास्तविक सत्य

5.आवश्यक निर्देश

6.यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री(सामान)

7.ऋतु के अनुकूल यज्ञ सामग्री

8.दैनिक देवयज्ञ करने की विधि और मन्त्र

1.देवता कौन?

आधुनिक जीवन में मनुष्य अपने पूर्वजों,पितरो को ही देवता मानने लगा है वो उनकी ईंटो की मूर्तियां स्थापित करता है और उन्हें देवताओं के रूप में पूजता है।उन्हें लगता है कि इनको पूजने से उनके घर में सुख शांति रहेगी ,उनके परिवार पर कोई कष्ट नही आएगा, और इनको ना पूजने से ये हमसे नाराज हो जायेंगे और इस कारण हमें बहुत सी परेशानियों और कष्टो को भोगना पड़ेगा। ये डर या कहे तो गलत अवधारणा हम लोगो के मन में कुछ धूर्त या अज्ञानी लोगो के द्वारा बैठा दी गई है।और अब हम इसी अज्ञान और डर की वजह से उन सफ़ेद ईंटो को सींचते और पूजते चले आ रहे हैं। लोगो में इतना अन्धविश्वास फैल गया है कि अब अगर उनके घर परिवार में कोई भी अप्रिय घटना होती है तो उनका शक सीधा अपने देवताओं पर जाता है, कि शायद देवता नाराज हो गए हैं,और अगले दिन पंडित के पास जाकर उस "शक" को और गहरा करके आते हैं, अब पंडित करे भी तो क्या भई उसको भी तो अपना घर चलाना है अब हर कोई तो आप जैसा विद्वान् और सत्यवादी नही होता। अब उन पंडितो के

झाँसे में आकर हम अपना खूब धन उन पर लुटाते हैं और कामना करते हैं कि ये हमारे देवताओं को प्रसन्न कर देंगे। कितना अन्धविश्वास है भाई...

हद तो तब होती है जब हम 5-5₹, 10-10₹ में उनको खरीदने लगते हैं जिनको हम देवता मानते हैं, ये बोलते हुए हमको शर्म भी नही आती कि, "हे देवता मेरा ये काम या वो काम करा देना" "तुझको इतने रुपये चढ़ाऊँगा" । ये तो सरासर उनको खरीदने वाली बात हुई भाई।एक बात और सोचने वाली है जिनको हम देवता कहते हैं क्या वो इतने लोभी,लालची, और भ्रष्ट है कि वो हर एक काम के लिए हमसे पैसे लेंगे या फिर वो इतने मुर्ख हैं कि आप अपने बड़े बड़े कामो के लिए उनको 5-5,10-10, 20-20, 100-100 ₹ रुपयों में मना लोगे।

थोड़ा तो सोचना चाहिए हमको क्या ये वास्तव में सही है जो हम कर रहे हैं या फिर अन्धविशवास है। बुद्धि हम सब को ईश्वर ने दी है सोचियेगा जरूर।

"देवता का अर्थ होता है देने वाला",ना कि लेने वाला। देवता वो जो केवल देता है ना कि लेता है और अगर वो हमसे वास्तव में कुछ लेता है तो वो देवता नही लेवता है। और लेवता को कौन

पूजता है भाई?... कोई नही।

सोचिये क्या जिन्हें हम ईंटे खड़ी करके अपने पितरों (देवताओं)के रूप में पूजते हैं क्या वो वास्तव में देवता हैं चलो मान लेते हैं कि वो देवता है क्योंकि ये सब जो हम अपने जीवन में प्रयोग कर रहे हैं वो सब उन्ही का ही तो दिया हुआ है, ये घर,पैसा,बंगला,गाड़ी,मकान, जमीन। लेकिन उनको किसने दिया उनके पूर्वजों ने, और उन पूर्वजो को किसने दिया,उन पूर्वजो के पूर्वजो ने...लेकिन अंत में देखा जाये तो इन सबको किसने दिया "ईश्वर" ने ना, तो हम क्यों न उस ईश्वर को ही पूजे जो इन सबसे ऊपर है। एक उदाहरण के तौर पर समझाना चाहूंगा मान लो कोई एक विद्वान् संत है और एक उसका शिष्य, संत तो आखिर संत है ही लेकिन शिष्य भी कुछ कम नही है अर्थात वो भी खूब ज्ञानी है फिर भी आप किसके पास जाना पसंद करोगे....संत के ना। इसी प्रकार एक और ईश्वर है जो कि सबका कर्ता धर्ता है (हमारे पितरो,देवताओं,पूर्वजो का भी)और एक और हमारे पूर्वज तो वास्तव में हमे किसको पूजना चाहिए....अर्थात ईश्वर को।

चलो फिर भी अगर पितरो,पूर्वजो को पूजना ही था तो हमने

उनको पहले क्यों नही पूजा जब वो जीवित थे। उनकी जीवित अवस्था में हमने उनके लिए कुछ किया नही और अब उनके मरने के बाद हम उन्हें पूजने चले हैं और वो भी ये सोचकर कि शायद ये हमे कुछ दे दे तो मै बताना चाहूंगा कि आप भ्रम में हो आपकी पूजा नही लगेगी, आपको तो उनके मरने के बाद भी ये लालसा है कि शायद इस मरे हुए से भी कुछ मिल जाये।

अगर हमे पूजना ही है तो उनको प्रत्यक्ष रूप में पूजना चाहिए अपने माता पिता, दादा दादी, जितने भी हमसे बड़े हैं बड़े ही श्रद्धा भाव के साथ उनकी सेवा हमको करनी चाहिए इस सेवा के बदले वो हमें आशीर्वाद स्वरूप कुछ ना कुछ दुआएं जरूर देते हैं और ईश्वर से भी हमारे सुखी जीवन की कामना करते हैं। हमारे इस सेवा भाव को देखकर हमारे बड़े तो हमसे प्रसन्न होते ही हैं साथ साथ ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं। यही हमारी अपने पूर्वजो,देवताओं के प्रति सबसे बड़ी पूजा है।

इन सबके अतिरिक्त इस सांसारिक जीवन में 5 देवता हैं जो कि वास्तव में देवता हैं और हमेशा सबको सामान रूप से लाभान्वित करते हैं चाहे कोई हिन्दू हो, मुस्लिम हो, ईसाई हो, पारसी हो, कोई भी हो उनके लिए सब समान हैं।ये कभी

किसी में भेदभाव नहीं करते।

इन्ही देवताओं को यज्ञ से प्रसन्न करने की बात इस पुस्तक में कही गई है।

ये पाँच देवता हैं- पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल, और आकाश।इन्ही पंच महाभूतों से हमारे शरीर का निर्माण हुआ है, इनमे से किसी भी देवता के दूषित या असंतुलित (आपकी भाषा में कहे तो रुष्ट)होने पर हमारा शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य बिगड़ने लगता है।

अब आप सोचेंगे कि ये सब देवता.... कैसे?

पहले पृथ्वी की बात करते हैं-

पृथ्वी सभी प्राणियों को अपनी गोद में सँभाले हुए है तथा प्रत्येक जीवधारी की प्रत्येक आवश्यकता की पूर्ति करती है उदहारण के तौर पर ये सभी पेड़ पौधे, साक सब्जियां, औषधियां आदि सब कुछ पृथ्वी पर ही उत्पन्न होता है और इन सबका उपयोग मनुष्य व अन्य जीव अपनी आवश्यकता पूर्ति के लिए करते हैं।इसलिए पृथ्वी देवता है।

अग्नि की बात करे तो शरीर के अंदर और बाहर भोजन

अग्नि के कारण ही पकता और पचता है हमारे शरीर में और वातावरण में जबतक अग्नि है तबतक ही हम जीवित है नही तो कब के ठंडे हो गए होते।इसलिए अग्नि भी देवता की श्रेणी में आती है।

हमारे शरीर में लगभग 60%जल होता है अर्थात इस शरीर को बनाने में जल देवता की अहम भूमिका है,पृथ्वी पर जल के बिना कोई भी प्राणधारी जीवित नही रह सकता अतः जल भी देवता है।

प्रत्येक जीवधारी को प्राण के लिए वायु की आवश्यकता होती है, हर एक श्वास के लिए वायु की आवश्यकता होती है, प्रत्येक जीवधारी को, वायु हमेशा बिना भेदभाव के उनकी आवश्यकता के अनुसार प्राण देती है।अतः वायु भी देवता है।

आकाश अर्थात खली स्थान,मनुष्य का शरीर और ये ब्रह्माण्ड खाली स्थान से ही बना है अगर खाली स्थान न होता तो ना तो पृथ्वी का निर्माण होता और ना ही फिर मनुष्य का।इसके अतिरिक्त अगर आकाश न होता तो मनुष्य अपनी दैनिक क्रियाएं जैसे चलना,फिरना,उठना,बैठना,खाना,पीना, आदि कुछ नही कर पता।यहाँ तक कि वो श्वास भी नही ले

पता और न ही उसके शरीर में रक्त प्रवाह आकाश के बिना हो पाता।इसलिए आकाश भी देवता है।

ये सभी बाते जो इनके बारे में बताई है वो तो केवल इनका परिचय मात्र ही है अगर आप इन्हें गहराई से जानोगे तो इनका क्षेत्र वास्तव में बहुत ही विस्तृत है।

ये सभी देवता बहुत ही महान है जिनको पूजने के बजाय हम इनको दूषित कर रहे हैं और इस प्रदूषण का फल हमे अनेक रोगों के माध्यम से वापस मिल भी रहा है। इन सभी रोगों के परिणाम स्वरूप मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो रहा है। अतः हमसे बड़ा अज्ञानी कौन?....कोई नही।

इसलिए हमें रोजाना यज्ञ करके इन सभी देवताओं को प्रसन्न और पवित्र रखना चाहिए। और साथ में ऐसा कोई भी कार्य न करे जिससे ये सभी प्रदूषित हों।

2. देव यज्ञ क्या है?

देवयज्ञ दो शब्दों से मिलकर बना है-देव+यज्ञ।देव शब्द का अर्थ है, खुद सुख स्वरूप प्रसन्न रहकर दूसरों को सुख देने वाला।और यज्ञ का अर्थ है प्रार्थना-उपासना।

अर्थात उसकी प्रसन्नता पूर्वक,पूरे श्रद्धा भाव के साथ प्रार्थना उपासना करना जोकि इस जगत के सभी जीवधारियों का कल्याण करने वाला है।

देवयज्ञ को अग्निहोत्र भी कहा जाता है अर्थात जिस क्रिया में पूर्ण श्रद्धा से, वेद मंत्रों के साथ, जलती हुई अग्नि में, ईश्वर द्वारा दी गई सर्वोत्तम सामग्री,औषधियों व दिव्य गुणों से युक्त देशी गाय के घी की आहूति(दान) दी जाती है। देव यज्ञ कहलाता है।

महर्षि दयानन्द जी कहते हैं "यद्गनो हूयते स देवयज्ञ:" अर्थात अग्नि में जो होम किया जाता है वही देव यज्ञ है।

इससे हमारे उन सभी देवताओं(पृथ्वी,अग्नि,वायु, जल,आकाश) की शुद्धि और पवित्रता हो जाती है या कहे तो ये सभी प्रसन्न होते हैं जिनसे हम बने हैं। इन सभी देवताओं के

शुद्ध होने से हम विकार रहित होने लगते है हमारे दोष नष्ट होने लगते हैं।

3. वैज्ञानिक दृष्टिकोण में यज्ञ के लाभ

1. फ़्रांस के प्रसिद्ध रसायन वैज्ञानिक मिस्टर त्रिले ने ज्ञात किया कि लकड़ी जलाने से और शक्कर जलाने से भी 'फार्मिक एल्डिहाइड' नामक गैस निकलती है जो कि सब प्रकार के कृमियों (germs) को नष्ट करती है। हवन, यज्ञ में तो लकड़ी के साथ साथ, शक्कर के रूप में खांड, मुनक्का, छुवार, किशमिश आदि जलाये ही जाते हैं जो कि फार्मिक एल्डिहाइड गैस निकालते हैं, यही गैस आजकल पानी में मिलाकर डॉक्टरों की दुकान पर 'फॉर्मेलिन' के नाम से बेचीं जा रही है।

2. फ़्रांस के ही एक और वैज्ञानिक टिलबर्ट बताते हैं कि शक्कर के जलाने से हैजा, तपेदिक, और चेचक आदि का विष बहुत ही जल्दी ख़त्म हो जाता है।

3. टाटलिस्ट महोदय कहते हैं कि मुनक्का,किशमिश,छुवारे, आदि सूखे फलों को हमने जलाकर देखा हमे ज्ञात हुआ कि

उनके धुँए से टाइफाइड ज्वर के कीटाणु आधे घंटे में तथा दूसरे रोगों के कीटाणु लगभग दो घंटे के अंदर मर जाते हैं।

4.डॉ कर्नल किंग, सेक्रेटरी कमिश्नर,(मद्रास) जी कहते हैं कि अगर घी,चावल में केशर मिलाकर जलाया जाये तो रोग के कृमियों का नाश होता है।

5. डॉ हेफकिन(फ़्रांस), कहते हैं कि अगर घी जलाया जाये तो उससे भी रोग के कीटाणु मर जाते हैं।

6.भारत के एक वैज्ञानिक ने कहा कि-"यह सत्य है कि प्राचीन भारतीयों द्वारा किये जाने वाले हवन यज्ञ से बादल बनते थे और वर्षा हुआ करती थी" ये खबर 8 अगस्त 1952 को हिंदुस्तान टाइम्स अख़बार में भी छपी थी।

4. यज्ञ के प्रति लोगों की अज्ञानता और वास्तविक सत्य

कुछ लोग अज्ञानवश यह कहते रहते हैं कि हवन करते समय कार्बनडाईआक्साईड गैस उत्पन्न होती, जो हमारे शरीर को हानि पहुँचाती है, लेकिन वास्तव में सच तो यह है कि वो बहुत बड़े अज्ञान का शिकार हुए बैठे हैं क्योंकि-

(1) हवन करते समय, हवन-कुण्ड के चारों ओर जल-सिंचन किया जाता है। अग्नि-प्रज्वलन से हवन-कुण्ड के समीपस्थ जल वाष्पीकृत होकर उड़ता है । समिधाओं से उत्पन्न कार्बनडाईआक्साइड के साथ जल-वाष्प में व्याप्त H२O भी मिल जाती है । इस प्रकार CO2 आद्र H2O

के साथ मिलकर प्राणियों के लिए हानिकारक नहीं होती ।

(2) हवन करते समय गौघृत के साथ--गिलोय, चन्दन, तुलसी,अगर-तगर, हैड़, बढेड़ा, आंवला, छुहारा, मुनक्का, बादाम, गोला,गुड़-शक्कर अथवा "चीनी, आदि के जलने से ऑक्सीजन बहुत अधिक मात्रा में उत्पन्न होती है, जिसके सामने उत्पन्न कार्बनडाई-आक्साईड नाम-मात्र की रह जाती है।

(3) प्रत्येक पदार्थ के जलने से कार्बन डाई आक्साईड अवश्य उत्पन्न होती है--किसी से अधिक और किसी से कम । हवन करते समय आम, ढाक, पीपल, बट, गूलर, आदि की ही लकड़ी से हवन किया जाता है । इसका कारण यह है कि इन वृक्षों की सूखी लकड़ियों से अन्य वृक्षों को अपेक्षा कार्बन डाई आक्साईड बहुत कम, जबकि आक्सीजन अधिक मात्रा में उत्पन्न होती हैं ।

(4) यज्ञ करते समय उत्पन्न फार्मलडिहाइड गैस (HCHO) में कार्बनडाइआक्साईड गैस रहती ही नहीं |अत: हानि पहुँचने

का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। उपर्युक्तअभिक्रिया से यह स्वत: सिद्ध है। यह गैस सभी जीवधारियों तथा वनस्पतियों के लिए लाभकारी होती है, क्योंकि फार्मलडिहाइड गैस हानिकारक जीवाणुओं (बैक्टीरिया) को मार देती है ।

(5) चीनी, गुड़, शक्कर, मधु, आदि मीठे पदार्थों में सुक्रोज होता है । सुक्रोज में गुलकोज एवं फ्रक्टोज ही होते हैं, जो पानी में घुलने पर मानव-शरीर को तत्काल ऊर्जा प्रदान करते हैं । इसीलिये निर्जलीकरण एवं शारीरिक दुर्बलता में चीनी का घोल तत्काल लाभ पहुँचाता है ।इसी प्रकार यज्ञ की अग्नि में सुक्रोज जलने पर फार्मलडिहाईड गैस बनती है, जो हानिकारक जीवाणुओं को तत्काल नष्ट करती है ।

(6) हवन करते समय उत्पन्न कार्बनडाईआक्साईड का भय दिखाकर हवन को हानिकारक बतानेवाले अज्ञानी लोगों को यह भी जान लेना चाहिये कि सृष्टि-संचालन के लिए संतुलित मात्रा में कार्बनडाईऑक्साईड भी अनिवार्य है। कार्ननडाईऑक्साईड प्राय: सभी प्रकार के पेड-पौधे के लिए

जीवन का आधार है । वे दिन में प्रकाश-संश्लेषण करते समय कार्बनडाईऑक्साईड गैस को ग्रहण और ऑक्सीजन छोड़ते हैं जो जीवधारियों के प्राण है। यज्ञ से तो बहुत कम मात्रा में CO2 निकलती है जो पेड़पौधो के लिए अमृत है।

(7) हवन के लिए हवन सामग्री को ऋतु के अनुकूल विशेष औषधियों एवं खाद्य पदार्थों के साथ बनाया जाता है। ऋतु-परिवर्तन के साथ ही वातावरण में नये -नये रोगाणु उत्पन्न हुआ करते हैं । आयुर्वेद के ऋषियों ने उन रोगाणुओं को नष्ट करने के लिए प्रत्येक ऋतु में उपलब्ध वनोषधियों की खोज की । उनमें से भी रोगाणुओं को शीघ्रता से नष्ट करनेवाली तथा घृत के साथ जलने

पर हानि न कर अत्यधिक लाभ करनेवाली औषधियों से ही हवन करने का विधान बनाया । हवन-सामग्री में भी कुछ पदार्थ एवं वनौषधियाँ तो ऐसी होती हैं, जो सभी ऋतुओं में लाभ करती हैं, परन्तु कुछ औषधियाँ ऐसी होती हैं, जो ऋतु विशेष में ही लाभ करती हैं । इसलिए हवन-सामग्री बनाते समय ऋतुओं के रोगों तथा उन्हें नष्ट करनेवाली वनौषधियों का चयन सावधानी पूर्वक एवं पूर्णत: वैज्ञानिक आधार पर

किया जाता है।

(8) स्थूल की अपेक्षा सूक्ष्म अधिक शक्तिशाली है, सूक्ष्म स्थूल में प्रवेश कर सकता है, स्थूल सूक्ष्म में नहीं। यज्ञ में जो ओषधियाँ डाली जाती हैं उनके परमाणु यज्ञ-अग्नि द्वारा सूक्ष्म होकर स्थूलरूप की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो जाते हैं ।

किसी वस्तु को सूक्ष्म करने का सबसे बड़ा साधन अग्नि है। परीक्षा के लिए एक लाल मिर्च लीजिए | स्थूलरूप में इसे एक व्यक्ति सुगमतापूर्वक खा सकता है, परन्तु खरल में घोटकर सूक्ष्म करने पर कई व्यक्ति उसके प्रभाव को न सह सकेंगे और यदि उसे आग में जला दें तो दूर-दूर बैठे लोग भी खाँसने लगेंगे, अर्थात् अग्नि द्वारा सूक्ष्म करने पर वस्तु की शक्ति सबसे अधिक बढ़ जाती है, अत: हवन-यज्ञ में प्रयुक्त ओषधियों के सूक्ष्म कणों द्वारा सूक्ष्म कीटाणुवाले रोग दूर हो सकते हैं।

परीक्षण करने के पश्चात् केमिकल्स प्रापरटीज़ की सम्मति इस विषय में निम्नलिखित प्रकार से है--

जायफल, जाबित्री, बड़ी इलायची, सूखा चन्दन इत्यादि अग्नि में जलाने पर उनके उपयोगी भाग ज्यों -के-त्यों रहते हैं या सूक्ष्म हो जाते हैं । पहले-पहल इनसे सुगन्धित तेल गैस

बनकर निकलते हैं । (हवन यज्ञ में ये चीज़ें अपने असलीरूप में मिलती हैं । अग्नि इन चीज़ों को गैस बना देती है लेखक) उड़नेवाले तेलों के परमाणु 1/10000 से लेकर 1/100000000 सेंटीमीटर व्यासवाले तक देखे गये हैं।

ये बाते हमारे ऋषियों के ज्ञान में थी, तभी तो उन्होंने यज्ञ को इतना लाभप्रद मानकर ऐसी खुली आज्ञा नहीं दी कि चाहे किसी समय, कितनी ही और कैसी ही लकड़ी लेकर, कितने ही बड़े कुण्ड में, कितनी हीं सामग्री जला दी जाए उससे सदैव लाभ ही होगा। उन विचारशील मनीषियों ने इन सब बातों के वैज्ञानिक ढंग पर नियम बनाये ताकि हानिकारक परिमाण में यह गैस न उत्पन्न हो । यज्ञ-कुण्ड के चारों ओर एक नाली बनाई जाती है । उसमें पानी भरा जाता है, जिससे यह गैस जितनी ऊपर पहुँच जाए वह तो वनस्पति-वृद्धि का कार्य करे और जितनी नीचे हवन-कुण्ड के पास रह जाए उसे पानी चूस ले। जो सज्जन ऋषियों की बताई विधि पर ध्यान न देकर मनमाने तरीके से इन वस्तुओं को आग में जलाएँ, सम्भव है, लाभ के साथ वे कुछ हानि भी उठाएँ । जैसाकि देखा भी गया

है कि बाजारू सस्ती, अशुद्ध सामग्री से नियम-विरुद्ध हवन करनेवाले रोगियों को खाँसी इत्यादि बढ़ जाती है परन्तु विधि पूर्वक हवन-यज्ञ से तो तपेदिक-जैसे भयानक रोग दूर हो सकते हैं।

5.आवश्यक निर्देश

1. यज्ञ प्रति दिन, सुबह व सायं ही करना चाहिए।

2.यज्ञ कोई भी कर सकता है स्त्री हो या पुरुष।

3. यज्ञ का स्थान साफसुथरा, सुन्दर होना चाहिए।

4. ऐसी जगह यज्ञ नही किया जा सकता जहाँ कूड़ा करकट और उसकी दुर्गन्ध फैली हुई है, जहाँ बहुत अधिक शोरगुल या उपद्रव हो।

5. यज्ञ करते समय उसके प्रति पूर्ण निष्ठा और समर्पण भाव होना चाहिए।

6.यज्ञ में कम से कम 6ग्राम और अधिक से अधिक60 ग्राम घी की आहुति देनी चाहिए।

7. यज्ञ के आसन, पात्र, वेदी आदि साफ शुद्ध व पवित्र हो।कटे फटे आसन, गंदे टूटे पात्र यज्ञ वेदी पर नही होने चाहिए।आसन और पात्र आदि यज्ञ के अतिरिक्त अन्य किसी काम में प्रयोग न किये जाये।

8. यज्ञ करने से पहले अच्छी तरह स्नान करके,साफ सुथरे धुले हुए वस्त्र पहनकर यज्ञ में बैठना चाहिए।

9. अगर हो सके तो सफ़ेद वस्त्र पहनकर बैठें।

10. महिलाएं सर पर कपडा रखकर ही बैठें, मासिक धर्म के समय काल में यज्ञ में ना बैठें।

11. यज्ञ में हमेशा श्रद्धा भाव के साथ थोड़ा आगे झुककर देनी चाहिए,सामग्री कुंड के बाहर इधर उधर न बिखरे इस बात का विशेष ध्यान रखें।

12. यज्ञ के सभी कार्य दाएं हाथ से करने चाहिए।

13. आहुति हमेशा "स्वाह" शब्द के उच्चारण के साथ ही एक साथ देनी चाहिए।

14. मंत्रो को पूर्ण रूप से तथा सही सही बोलना चाहिए।

15. यज्ञ करते समय आपस में बात चीत नही करनी चाहिए।

16. यज्ञ में काम आने वाली समस्त सामग्री यज्ञ आरम्भ करने से पहले ही यज्ञ शाला में रख लेनी चाहिए।

17. एक बार यज्ञ आरम्भ होने के बाद उसे बीच में नही रोकना चाहिए।

18. हवन कुंड में आग जलने के लिए कभी भी मुँह से फूंक न मारे।

6.यज्ञ के लिए आवश्यक सामग्री (सामान)

1.यज्ञ समिधा-

पलाश,शमी,पीपल,बड़(बरगद),गूलर,आम,बिल्ब आदि में से किसी भी पेड़ की लकड़ी का प्रयोग किया जा सकता है, बस ध्यान रहे की ये कीड़ा लगी न हो, मिट्टी आदि से सनी हुई न हो,गंदे अशुद्ध स्थान की न हो,किसी भी ऐसे पदार्थ से दूषित न हो जो हमारे लिए हानिकारक हो।

हवन सामग्री- हवन सामग्री चार चीजो से मिलकर बनी होनी चाहिए जो निम्न है

2. सामग्री= सुगन्धित+पुष्ट+मिष्ठ(मीठा)+औषधि

सुगन्धित-कस्तूरी,केसर,अगर तगर,श्वेत चन्दन,इलायची,जायफल,जावित्री,आदि।

पुष्टिकारक-घी,दूध,फल,कंद, चावल,गेंहू,उडद,आदि।

मिष्ठ-शक्कर,शहद,छुवारे,दाख, आदि।

रोगनाशक-सोमलता(गिलोय),आदि ओषधियाँ।

3.घी-250gm

4.हवन सामग्री-500gm

5.समिधा(लकड़िया)-2.5kg

6.कपूर

7.रुई (दीपक की बाती के लिए)

8.दियासलाई(माचिस)

9.हवनकुण्ड

10.दीपक

11. पात्र-[तांबे के गिलास-4 (जल भरकर रखने के लिए),घृतपात्र-1, चम्मच-4(गिलास से आचमन के लिए जल लेने के लिए), बड़ी चम्मच-1(घृत आहुति देने के लिए), तश्तरी या प्लेट-4(सामग्री रखने के लिए), लोटा-1(यज्ञ वेदी के चारो और जल प्रसेचन के लिए)]

12.आसन - कम से कम 4

13. पानी(जल) - यज्ञ कुंड के चारो कोनो में तांबे के गिलास,लोटे में भरकर रखने के लिए।

7.ऋतु के अनुकूल हवन सामग्री

वसन्त ऋतु

A. गूगल, देसी शक्कर- प्रत्येक 10 भाग।

B. धूप का बुरादा, देवदारु, गिलोय, मुनक्का, गूलर की छाल, सुगंधकोकिला, हाऊबेर- प्रत्येक 2 भाग।

C. चिरायता, चन्दन सफ़ेद, चन्दन लाल,जायफल, कमलगट्टा, कपूरकचरी, इन्द्रजौ, शीतलचीनी, तालीसपत्र, अगर, तगर,मजीठ--प्रत्येक 1 भाग।

D. जावित्री 1/4 भाग,

E. केसर 1/8 भाग।

ग्रीष्म ऋतु

A. गूगल, देसी शक्कर--प्रत्येक 10 भाग।

B. गुलाब के फूल, चिरौंजी,शतावर, खस, गिलोय,
सुपारी--प्रत्येक दो भाग |

C. ऑवला, जटामवासी, नागरमोथा, बायबिडंग
छरीला, दालचीनी, लौंग, चन्दन सफेद, चन्दन लाल, तगर, मंजीठ, इलायची बड़ी, धूप का बुरादा, तालीसपत्र, उन्नाव
पदमाख--प्रत्येक एक भाग ।

D. केसर 1/8भाग ।

वर्षा ऋतु

A. गूगल 10 भाग,

B. देसी शक्कर 8 भाग ।

C. देवदारु, राल, गोला, जायफल, जटामांसी
(बालछड़), वच, सफ़ेद चन्दन, छुहारे, नीम
के सूखे पत्ते, मकोय जडसहित, सुगन्धकोकिला--

प्रत्येक 2 भाग ।

D. काला अगर, इन्द्रजौ, धूप का बुरादा, तगर,
तेजपत्र, बेल का गूदा, गिलोय, तुलसी,
बायबिडंग, नागकेसर, चिरायता--प्रत्येक 1 भाग ।

E. छोटी इलायची 1/2 भाग

F. केसर 1/8 भाग ।

शरद ऋतु

A. गूगल, चन्दन सफ़ेद, चिरौंजी, गूलर की छाल,
पीली सरसों, कपूरकचरी, जायफल, चिरायता,
जटामांसी, सहदेवी--प्रत्येक 2.5भाग।

B. चन्दन लाल,चन्दन पीला, नागकेसर,
गिलोय, दालचीनी, पित्तपापड़ा, मोचरस,
अगर, इन्द्रजी, असगन्ध, शीतलचीनी, पत्रज,

तालमखाना, धान की खील---प्रत्येक एक भाग |

C. किशमिश 5 भाग

D. देशी शक्कर 8भाग ।

E. केसर 1/2 भाग ।

शिशिर ऋतु

A. गूगल 5भाग

B. देशी शक्कर 8भाग।

C.अखरोट की गिरी, मुनकका, कालेतिल, चन्दन
लाल, चिरायता, छुहारा, जटामांसी, तुम्बरू,
राल--प्रत्येक 2.5भाग ।

D. काफूर, बायबिडंग, इलायची बड़ी, सुलहठी,
मोचरस, गिलाय, तज, तुलसी, चिरौंची,
काकड़ा सीगड़ी, शतावर, दारूहल्दी, पदमाख, सुपारी-प्रत्येक

एक भाग।

E. रेणुका, शंखपुष्पी, कौंच के बीज, भोजपत्र--
प्रत्येक 1/2भाग ।

हेमन्त ऋतु

A. गूगल 10 भाग।

B. देशी शक्कर 8 भाग ।

C. कपूरकचरी,मुनक्का, अखरोट गिरी, काले तिल,
गोला, सुगन्धकोकिला, हाऊबेर--प्रत्येक 2 भाग ।

D. मूसली काली, पित्तपापड़ा, कूठ, गिलोय,
दालचीनी, जावित्री, मुश्कबाला, तालीसपत्र,
तेजपत्र, सफेद चन्दन--प्रत्येक 1 भाग ।

E. रासना 1/2 भाग ।

F. केसर 1/8भाग ।

आचमन पात्र

व

सामग्री

घृत आहुति के लिए चम्मच

व

समिधाएँ

तांबे का यज्ञकुंड

व

यज्ञ के लिए तैयार यज्ञ कुण्ड

दाएँ हाथ से आचमन करती महिला

अंग स्पर्श मंत्रो द्वारा जल से मुख स्पर्श करते हुए

आँख स्पर्श करते हुए व

कान स्पर्श करता पुरुष

भुजा स्पर्श करता दंपत्ती

दैनिक देवयज्ञ करने की विधि

पुरोहित(पंडित या यज्ञ करने वाला) यज्ञ वेदी के दक्षिण दिशा में उत्तर दिशा की और मुख करके बैठेगा। यज्ञमान(यज्ञ कराने वाला) यज्ञवेदी की पश्चिम दिशा में पूरब दिशा की ओर मुख करके बैठेगा। सबसे पहले यज्ञ कुण्ड को बीच में रखकर उसके चारों और साफ सुथरे आसन बिछा देंगे। उसके बाद यज्ञ का सभी आवश्यक सामान अपने पास रख लेंगे। यज्ञ कुंड में छोटी

छोटी पतली समिधाएं (ऊपर दिए गए चित्र की भाँती रख लेंगे),यज्ञ कुंड के चारो कोनो पर तांबे के गिलासों में पानी भरकर रख लेंगे। साथ में एक लोटे में भी जल भरकर रख लेंगे। यज्ञ कुंड के उत्तरी-पूर्वी कोने पर घी का दीपक रख लेंगे।घी और सामग्री की आहूति के लिए, घी को किसी कटोरी में,सामग्री को प्लेटो में करके चारो और एक एक प्लेट दे देंगे।घी की आहुति पुरोहित या यज्ञमान डाले बाकि सभी व्यक्ति सामग्री की आहुति डालें।

वैदिक देव यज्ञ आरम्भ करते हैं

1. गायत्री महामंत्र

ॐ भूर् भुवः स्वः! तत् सवितुर् वरेण्यम्

भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो यो नः प्रचोदयात् ।

तूने हमें उत्पन्न किया, पालन भी कर रहा है तू।
तुझसे ही पतो प्राण हम, दुखियों के कष्ट हरता है तू॥
तेरा महान् तेज है, फैला हुआ सभी स्थान।
सृष्टि की वस्तु-वस्तु में, तू हो रहा है विद्यमान् ॥
तेरा ही धरते ध्यान हम, माँगते-तेरी दया।
ईश्वर हमारी बुद्धि को, श्रेष्ठ मार्ग पर चला॥

2. आचमन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र बोलकर दायीं हथेली में जल लेकर तीन आचमन करें।

ॐ अमृतो पस्त रणमसि स्वाहा॥1॥ इससे पहला आचमन

ॐ अमृता पिधान मसि स्वाहा॥2॥ इससे दूसरा आचमन

ॐ -सत्यं यशः श्रीर् मयि श्रीः श्रयतां स्वाहा॥3॥। इससे तीसरा आचमन

3. अंगस्पर्श मन्त्र

बायें हाथ की हथेली में जल लेकर निम्नलिखित मंत्रो के साथ दाएं हाथ की दोनों बीच की अंगुलियों से अंगस्पर्श करें

ॐ वाङ्ग म आस्ये अस्तु॥1॥ इस मन्त्र से मुख का अधो भाग

ॐ -नसोर् में प्राणो अस्तु॥2॥ इस मन्त्र से

नासिका के दोनों छिद्र,

ॐ -अक्षणोर् मे चक्षु रस्तु॥3॥ इस मन्त्र से दोनों आँखें,

ॐ कर्ण योर् में श्रोत्र मस्तु॥4॥ इस मन्त्र से दोनों कान,

ॐ बाह वोर् में बलम् अस्तु॥5॥ इस मन्त्र से दोनों बाहु,

ॐ -ऊर् वोर् म ओजो अस्तु॥6॥ इस मन्त्र से दोनों जंघा,

ॐ -अरिष्टानि मेङ्गानि तनूस् तन्वा में सह सन्तु॥7॥ इस मन्त्र से सम्पूर्ण शरीर पर जल छिडकें

4. ईश्वर-स्तुति प्रार्थना-उपासना मन्त्र

निम्नलिखित मंत्रो से ईश्वर की उपासना करें

ॐ -विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव।यद् भद्रं तन्न आ सुव॥1॥

ॐ -हिरण्य गर्भ: सम वर्त ताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत् ।

स दाधार पृथिवीं द्या मुतेमाम् कस्मै देवाय हविषा विधेम॥2॥

ॐ -य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्र+शिषं यस्य देवा:।

यस्यच छाया मृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम॥3॥

ॐ य: प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।

य ईशे अस्य द्विपदश् चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम॥4॥

ॐ -येन द्यौ रुग्रा पृथिवी च दृढ़ा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।

यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम॥5॥

यत् कामास्ते जुहु मस् तन् नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥6॥

ॐ -स नो बन्धुर् जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।

यत्र देवा अमृत मान शानास् तृतीये धामन् नध्यै रयन्त॥7 ॥

ॐ अग्ने नय सुपधा राये अस्मान् विश्वानि देव

वयु नानि विद्वान्।

युयो ध्यस् +मज्जु हुराण मेनो भूयिष् ठान्ते नम उक्तिं विधेम॥8॥

5. अग्नि-प्रज्जवलन मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुए दियासलाई(माचिस) से दीपक जलायें।

ॐ -भूर् भुवः स्वः।

6. यज्ञकुण्ड में अग्नि स्थापित करने

का मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र को बोलते हुए समिधा पर लगी हुई कपूर व घृत लगी रूई की बत्ती को दीपक से प्रज्वलित करके यज्ञकुण्ड में रखें।

ॐ --भुर्+भुव: स्वर् +द्यौ+रिव भूम्ना पृथिवी व वरिम्णा।

तस्यास+ते पृथिवी देवय जनि पृष्ठे, अग्नि मन्ना दमन्ना द्याया दधे ॥1॥

7. अग्नि-प्रदीप्त करने का मन्त्र

ॐ -उद् बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते सं सृजे था मयं च।

अस्मिन् स धस्ते अध्युत्त रस्मिन् विश्वे देवा यज+मानश्च+सीदत॥2॥

8. समिदाधान मन्त्र

पहले से तैयार की हुई आठ-आठ अंगुल की तीनों समिधाओं को घी में डुबो लें। तत्पश्चात तीनों समिधायें निम्नलिखित 4 मन्त्र बोलकर क्रमश: यज्ञकुण्ड में जलती हुई अग्नि पर रखें। (दूसरी समिधा 2 एवं 3 मंत्र में रखें)

ॐ --अयन्त इध्म आत्मा जात वेदस् तेने, ध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय,चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्म वर्चसे नान्ना धेन समेधय स्वाहा।

इद मग्नये जात वेदसे-इदन्न मम॥1 ॥

ॐ समि धाग्निम् दुवस्यत घृतैर् बोध यता तिथिम्।आस्मिन् हव्या जुहोतन स्वाहा॥2॥

ॐ सुस मिद्धाय शोचिषे घृतं तीव्रं जुहोतन। अग्नये जात वेदसे स्वाहा।

इद मग्नये जात वेदसे-इदन्न मम 3॥

ॐ -तन्त्वा समिद् भिरङ्गिरो घृतेन वर्द्धया मसि। बृहच् छोचा यविष्ठय स्वाहा इद् मग्नये अङ्गि रसे इदन्न मम॥4॥

9. पंचघृताहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र का पांच बार उच्चारण करें और प्रत्येक बार

घी की आहुति प्रदान करें

ॐ -अयन्त इध्म आत्मा जात वेदस् तेने, ध्यस्व वर्धस्व चेद्ध वर्द्धय चास्मान् प्रजया पशुभिर् ब्रह्म वर्चसे, नान्ना धेन समेधय स्वाहा।

इद+मग्नये जात वेद+से इदन्न मम ॥1॥

10. जलप्रसेचन मन्त्र

निम्न मंत्रों से दायीं ओर से बाई ओर जल सिंचन करें

ॐ अदिते नु मन्यस्व॥1॥ (इस मन्त्र से पूर्व दिशा में)

ॐ -अनुमते नु मन्यस्व॥2॥ (इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में)

ॐ -सरस्वत्य नु मन्यस्व॥3॥ (इस मन्त्र से उत्तर दिशा

में)

ॐ -देव सवित: प्रसुव यज्ञं प्र सुव यज्ञपतिं भगाय।

दिव्यो गन्धर्व: केतपू: केतं न: पुनातु वाचस् पतिर् वाचं न: स्वदतु॥॥4॥

इस मन्त्र से दक्षिण दिशा से शुरु करके वेदि के चारों ओर जल सेचन करें।

11. आधारावाज्यभागाहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के उत्तर में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें :

ॐ -अग्नये स्वाहा। इद् मग्नये-इदन्न मम॥1॥

निम्नलिखित मन्त्र से यज्ञकुण्ड के दक्षिण में जलती हुई आग्नि पर घी की आहुति दें :

ॐ -सोमाय स्वाहा। इद सोमाय- इदन्न मम॥2॥

निम्नलिखित मन्त्रों से यज्ञकुण्ड के मध्य में जलती हुई अग्नि पर घी की आहुति दें :

ॐ -प्रजा पतये स्वाहा। इदं प्रजा पतये-इदन्न मम॥3॥

ॐ -इन्द्राय स्वाहा। इदं मिन्द्राय-इदन्न मम4॥।

12. दैनिक प्रातः कालीन आहुतियों के मन्त्र

प्रात:कालीन अग्निहोत्र (देवयज्ञ) करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें।

ॐ -सूर्यो ज्योतिर् ज्योतिः सूर्यः स्वाहा॥1॥

ॐ -सूर्यो वर्चो ज्योतिर् वर्चः स्वाहा॥2॥

ॐ -ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥3॥

ॐ -सजूर् देवेन सवित्रा सजू रुष सेन्द्र वत्या।
जुषाणः सूर्यो वेतु स्वाहा॥4॥

13. दैनिक सायंकालीन आहुतियों

के मन्त्र

सायंकाल अग्निहोत्र करते समय निम्नलिखित मन्त्रों से घी तथा सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें तीसरे मन्त्र में मौन रहकर आहुति प्रदान करें अर्थात् 'ॐ' तथा 'स्वाहा' शब्द स्पष्ट बोलें तथा शेष का मन में उच्चारण करके आहुति प्रदान करें।

ॐ-अग्निर् ज्योतिर् ज्योति रग्नि:स्वाहा॥1॥।

ॐ-अग्निर् वर्चों ज्योतिर् वर्च: स्वाहा॥2॥।

ॐ-अग्निर् ज्योतिर् ज्योति रग्नि: स्वाहा॥3॥

ॐ-सजूर् देवेन सवित्रा सजू रात्रि एन्द्र वत्या।

जुषाणों अग्निर् वेतु स्वाहा॥4॥।

14. प्रात:-सायं दोनों समय की आहुतियों के मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्रों से दोनों समय घी और सामग्री की आहुतियाँ प्रदान करें:

ओ३म् -भूरग्नये प्राणाय स्वाहा। इद मग्नये प्राणाय-इदन्न मम॥1॥

ॐ-भुवर् वायवे पानाय स्वाहा। इदम् वायवे पानाय-इदन्न मम ॥2॥

ॐ-स्वरा दित्याय व्यानाय स्वाहा। इद मा दित्याय व्यानाय इदन्न मम ॥3॥

ॐ -भूर् भुव: स्व रग्नि वाय्वा दित्येभ्य:

प्राणापान व्यानेभ्य: स्वाहा।

इद मग्नि- वाय्वा दित्येध्य: प्राणापान-व्यानेभ्य:- इदन्न मम॥4॥

ओ३म् आपो ज्योती रसो मृतं ब्रह्म भूर् भुव: स्वरों स्वाहा॥5॥

ओ३म् -यां मेधां देव गणा: पित रश्चों पासते। तया मा मध मेध याग्ने मेधाविनं कुरु स्वाहा।6॥

ॐ विश्वानि देव सवितर् दुरितानि परा सुव। यद् भद्रं तन्न आसुव स्वाहा॥7॥।

ॐ -अग्ने नय सुपथा रायेअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयो ध्यस् मज्जु हुराण मेनो भूयिष् ठान्ते नम उक्तं विधेम स्वाहा॥8॥

15. गायत्री मन्त्र से आहुतियाँ

निम्नलिखित मंत्रो का तीन बार या पाँच बार या 11बार (सामग्री और घी की मात्रा के हिसाब से)उच्चारण करें और हर बार घी तथा सामग्री की आहुति प्रदान करें

ॐ -भूर् भुव: स्व: तत् सवितुर् वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो न: प्रचो दयात् स्वाहा॥

ॐ -त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् । उर्वा रुक मिव बन्धनात् मृत्योर् मुक्षीय मा मृतात् स्वाहा॥

ॐ -स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचो दयन्ताम् पाव मानी द्वि -जानाम्।

आयु: प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्म वर्चसम्
मह्यं दत्वा व्रजत ब्रह्मलोकं स्वाहा॥

16. वैदिक राष्ट्रीय प्रार्थना

ॐ -आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चसी जायताम्
आ राष्ट्रे राजन्य: शूर् इष व्योति व्याधि महारथो
जायतां दोग्ध्री धेनुर वोढा नड्वा ना शुः सप्तिः
पुरन्धिर् योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यज
मानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर
जन्यो वर्षतु फल वत्यो न औषधय: पच्यन्तां योग
क्षेमो न: कल्पताम्॥

17. पूर्णआहुति मन्त्र

निम्नलिखित मन्त्र से घी तथा सामग्री की तीनआहुतियाँ प्रदान करें।

ॐ-सर्वं वै पूर्णं स्वाहा॥

ॐ हे सबके रक्षक परमेश्वर, आपकी कृपा में, सर्वम् = यह सम्पूर्ण यज्ञ कर्म, पूर्णम् = पूरा हो गया, स्वाहा = मै यह पूर्णाहूति प्रदान कर रहा हूँ।

18. सर्वकुशल प्रार्थना

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाग भवेत्॥

हे ईश! सब सुखी हों, कोई न हो दु:खारी।
सब हों निरोग भगवन् धन-धान्य के भण्डारी॥
सब भद्र भाव देखें, सनमार्ग के पथिक हों।
दु:खिया न कोई होवे, सृष्टि में प्राणधारी।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव , त्वमेव बन्धुश् च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव:॥

19. यज्ञ प्रार्थना

पूजनीय प्रभो! हमारे भाव उज्जवल कीजिए।
छोड़ देवें छल-कपट को मानसिक बल दीजिए।॥

वेद की बोलें ऋचाएँ सत्य को धारण करें।
हर्ष में हो मग्न सारे शोक-सागर से तरें॥
पञ्च यज्ञादिक रचाएं विश्व के उपकार को।
धर्म-मर्यादा चलाकर लाभ दें संसार को॥
नित्य श्रद्धा-भक्ति से यज्ञादि हम करते रहें।
रोग-पीड़ित विश्व के सन्ताप सब हरते रहें॥
भावना मिट जाए मन से पाप-अत्याचार की।
कामनाएं पूर्ण होवें यज्ञ से नर-नारि की॥
लाभकारी हो हवन हर प्राणधारी के लिए।
वायु जल सर्वत्र हों शुभ गन्ध को धारण किये॥
स्वार्थ भाव मिटे हमारा प्रेमपथ विस्तार हो।
"इदन्न मम" का सार्थक प्रत्येक में व्यवहार हो।
प्रेम रस में तृप्त होकर वन्दना हम कर रहे।
'नाथ' करुणा रूप करुणा आपकी सब पर रहे॥

20. शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर् विश्वे देवाः शान्तिर् ब्रह्म शान्तिः सर्वं शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि॥

॥ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥